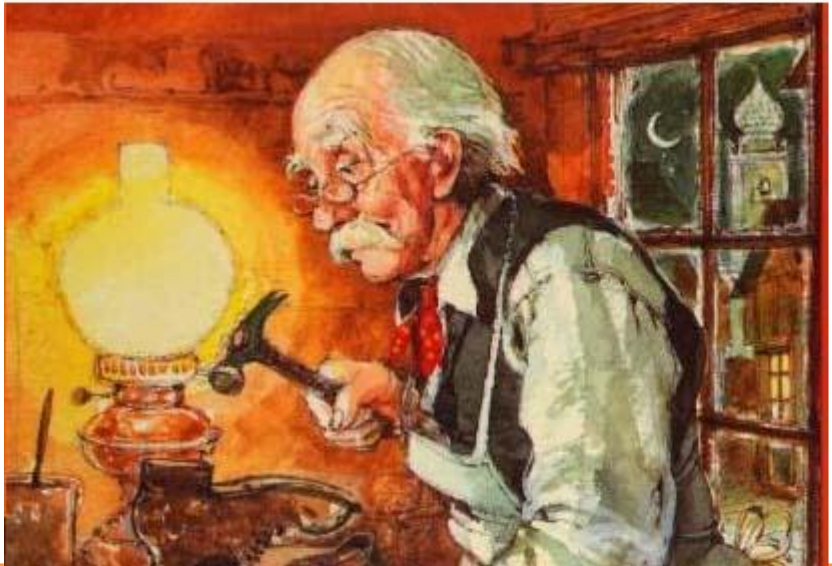
पापा पनोव

का विशेष दिन

टॉल्स्टॉय द्वारा पुनर्कथन



पापा पनोव

का विशेष दिन



टॉल्स्टॉय द्वारा पुनर्कथन

हिंदी : अरविन्द गुप्ता

बहुत समय पहले, शायद याददाश्त से भी बहुत पहले, एक बूढ़ा मोची रहता था. एक छोटे से रूसी गाँव में उसका एक बहुत छोटा सा घर था.

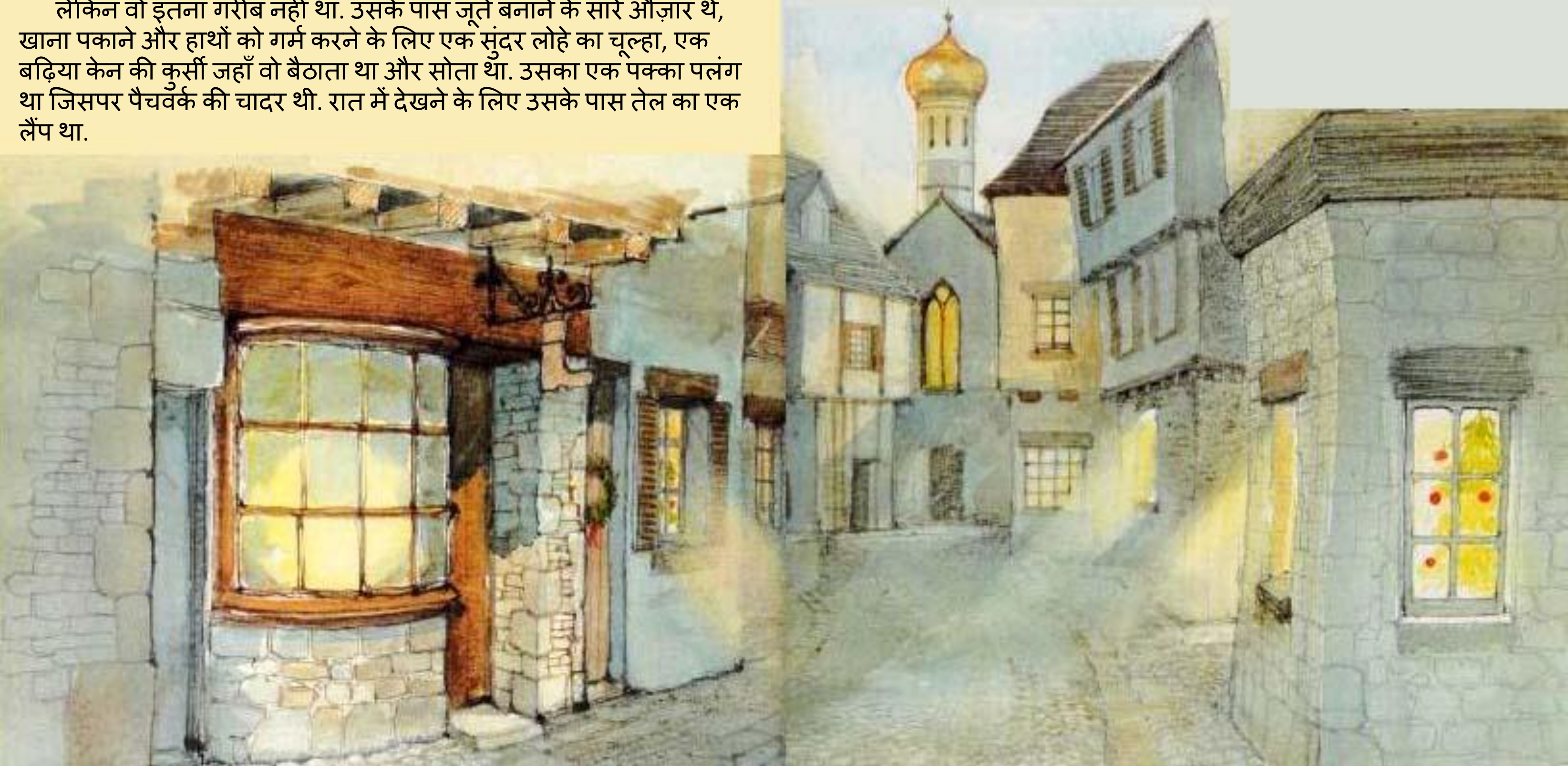
उसका नाम पनोव था. लेकिन कोई भी उन्हें पनोव या मिस्टर पानोव या मोची पानोव नहीं बुलाता था. वो गाँव में जहाँ भी जाता, लोग उसे पापा पनोव के नाम से बुलाते थे क्योंकि हर कोई उसे बहुत चाहता था.

पापा पानोव बहुत अमीर नहीं थे - दुनिया में उनके पास एक छोटा कमरा था जिससे गाँव की सड़क साफ़ दिखती थी. और उसी एक कमरे में वो रहता था, सोता था और जूते बनाता था.

लेकिन वो इतना गरीब नहीं था. उसके पास जूते बनाने के सारे औज़ार थे, खाना पकाने और हाथों को गर्म करने के लिए एक सुंदर लोहे का चूल्हा, एक बढ़िया केन की कुर्सी जहाँ वो बैठाता था और सोता था. उसका एक पक्का पलंग था जिसपर पैचवर्क की चादर थी. रात में देखने के लिए उसके पास तेल का एक लैंप था.

और ऐसे बहुत से लोग थे जो नए जूते बनवाना चाहते थे, या पुराने जूतों की मरम्मत करवाना चाहते थे. इसलिए पापा पानोव की इतनी कमाई हो जाती थी कि वे बेकर से रोटी खरीद सकें, किराने की दुकान से कॉफी और रात के सूप के लिए गोभी खरीद सकें.

इसलिए ज्यादातर समय पापा पानोव काफी खुश रहते थे. उनकी आंखें उनके छोटे गोल चश्मे में से चमकती रहती थीं और वो गुनगुनाते और सीटी बजाते थे और सड़क पर गुजरने वाले लोगों का अभिवादन करते थे.

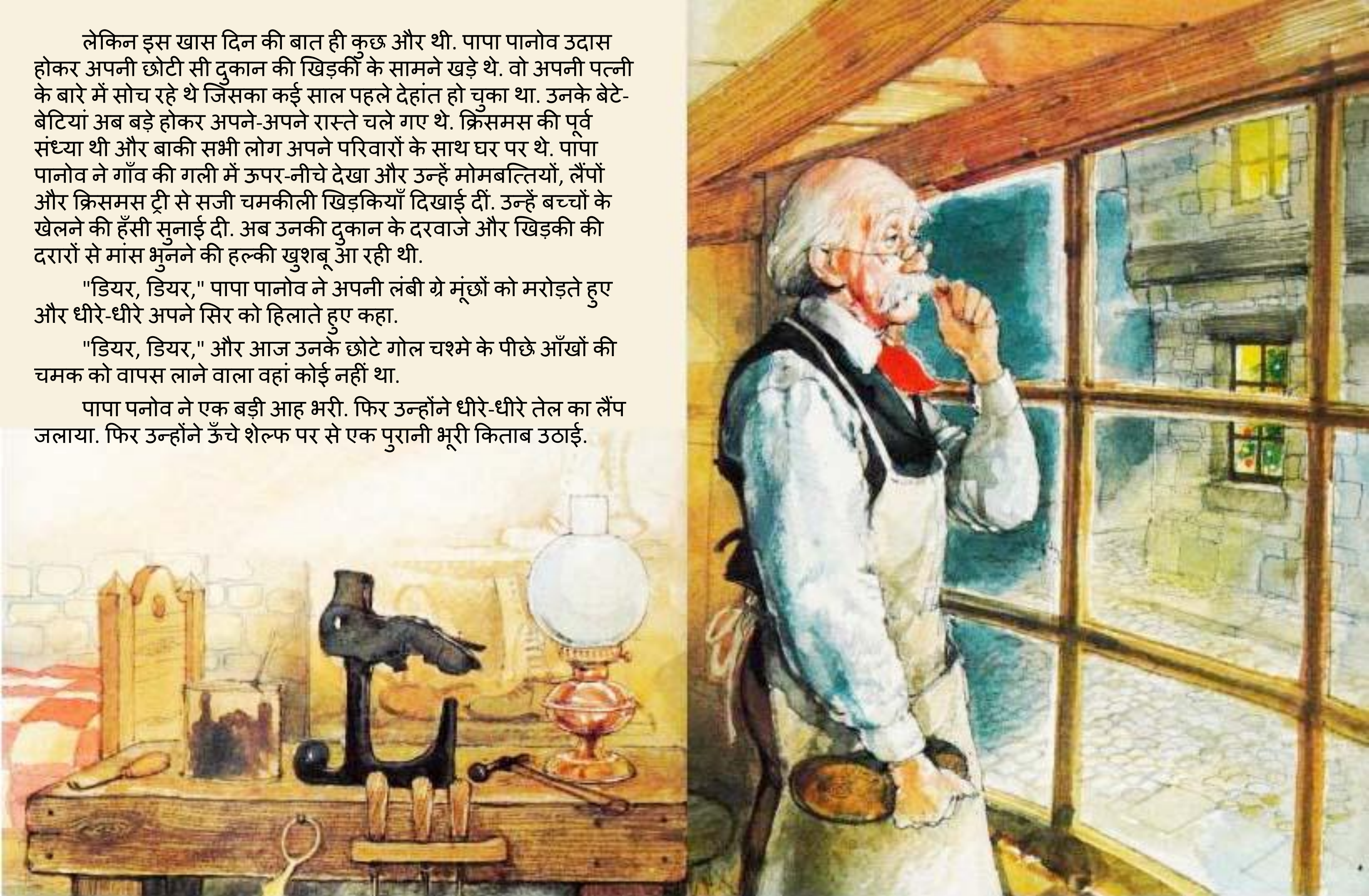


लेकिन इस खास दिन की बात ही कुछ और थी. पापा पानोव उदास होकर अपनी छोटी सी दुकान की खिड़की के सामने खड़े थे. वो अपनी पत्नी के बारे में सोच रहे थे जिसका कई साल पहले देहांत हो चुका था. उनके बेटे-बेटियां अब बड़े होकर अपने-अपने रास्ते चले गए थे. क्रिसमस की पूर्व संध्या थी और बाकी सभी लोग अपने परिवारों के साथ घर पर थे. पापा पानोव ने गाँव की गली में ऊपर-नीचे देखा और उन्हें मोमबत्तियों, लैंपों और क्रिसमस ट्री से सजी चमकीली खिड़कियाँ दिखाई दीं. उन्हें बच्चों के खेलने की हँसी सुनाई दी. अब उनकी दुकान के दरवाजे और खिड़की की दरारों से मांस भुनने की हल्की खुशबू आ रही थी.

"डियर, डियर," पापा पानोव ने अपनी लंबी ग्रे मूंछों को मरोड़ते हुए और धीरे-धीरे अपने सिर को हिलाते हुए कहा.

"डियर, डियर," और आज उनके छोटे गोल चश्मे के पीछे आँखों की चमक को वापस लाने वाला वहां कोई नहीं था.

पापा पनोव ने एक बड़ी आह भरी. फिर उन्होंने धीरे-धीरे तेल का लैंप जलाया. फिर उन्होंने ऊँचे शेल्फ पर से एक पुरानी भूरी किताब उठाई.





उन्होंने बेंच से चमड़े के कुछ टुकड़े झाड़ कर हटाए. उन्होंने चूल्हे पर कॉफी का बर्तन रखा, फिर बड़ी केन की कुर्सी पर बैठकर किताब पढ़ने लगे. पापा पनोव कभी स्कूल नहीं गए थे और वो ठीक से पढ़ भी नहीं सकते थे, इसलिए पढ़ते समय वो शब्दों को ज़ोर-ज़ोर से बोलते थे और अपनी उंगली को लाइनों पर दौड़ाते थे.

वो क्रिसमस की कहानी पढ़ रहे थे कि कैसे छोटे बच्चे यीशु का जन्म एक अच्छे गर्म घर में नहीं, बल्कि एक गौशाला में हुआ था क्योंकि उस सराय में कोई कमरा खाली नहीं था जहाँ उसके माता-पिता रात को रुक सकते थे.

"डियर, डियर," पापा पानोव ने अपनी लंबी मूंछें खींचते हुए कहा. “अगर वे मेरे यहाँ आते, तो वे मेरे अच्छे बिस्तर पर सो सकते थे और मैं छोटे लड़के को अपनी पैचवर्क की रजाई से ढँक देता. मुझे एक छोटे बच्चे के साथ खेलना बहुत पसंद आता."

पापा पनोव उठे और उन्होंने चूल्हे की राख को गिराया. बाहर काफी कोहरा छा गया था इसलिए उन्होंने लैंप तेज़ किया. उन्होंने अपने लिए एक मग में कॉफी डाली और फिर वापस किताब पढ़ने लगे.

उन्होंने पढ़ा कि कैसे कुछ अमीर व्यापारियों ने छोटे बच्चे यीशु को अद्भुत उपहार देने के लिए रेगिस्तान की यात्रा की और वे सोने और सुगंधित मसालों के उपहार लाए.

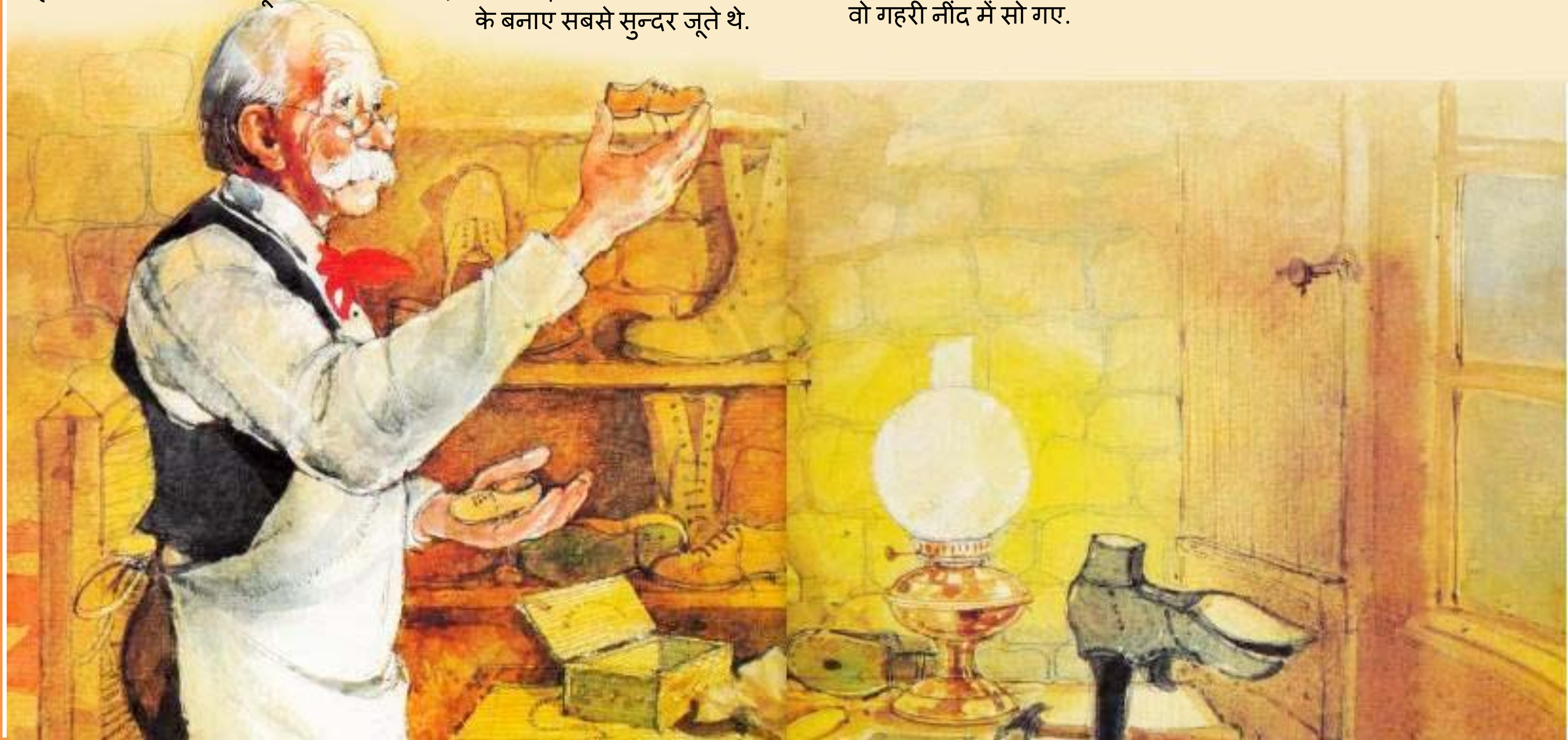
"डियर, डियर," पापा पानोव ने आह भरी, "अगर यीशु यहाँ पधारते तो मेरे पास उन्हें देने के लिए कुछ भी नहीं होता." फिर वो मुस्कुराए और उनके छोटे गोल चश्मे के पीछे उनकी आँखें चमक उठीं. वो मेज से उठे और उन्होंने ऊँचे शेल्फ पर रखे, डोरी से बंधे एक धूल से सने डिब्बे को उठाया. उन्होंने वो डिब्बा खोला और उसमें से छोटे जूतों की एक जोड़ी निकाली. अब पापा पनोव के दोनों हाथों में एक-एक छोटा जूता था और वो एकदम शांत खड़े थे. वे उनके अब तक के बनाए सबसे सुन्दर जूते थे.

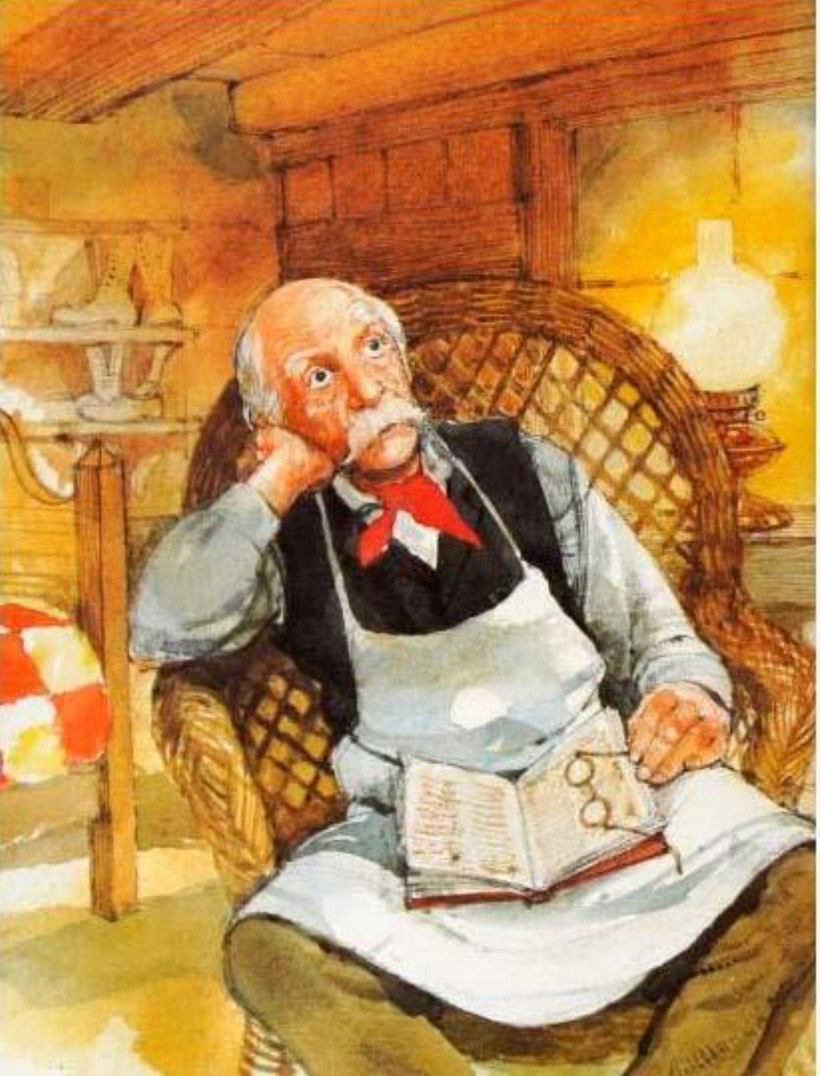
उन्होंने उन जूतों को प्यार से वापिस उसी बक्से में डाल दिया और फिर दुबारा अपनी केन की कुर्सी पर आकर बैठ गए.

"अगर यीशु मेरे पास आते तो मैं उन्हें यही देता," उन्होंने बड़बड़ाया.

उन्होंने एक गहरी आह भरी और ध्यान से दुबारा फिर किताब पढ़ने लगे.

अब कमरे की गर्मी थी या बहुत देर हो गई थी, इसका किसी को नहीं पता था. लेकिन पापा पनोव की उंगली अब पन्ने से फिसलने लगी थी, और उनका छोटा गोल चश्मा उनकी नाक से फिसलकर गिर गया और वो गहरी नींद में सो गए.





बाहर कोहरा घना हो गया था. लोगों की परछाइयां खिड़की के पिछले हिस्से में से चमक रही थीं, लेकिन बूढ़ा मोची धीरे से खर्राटे ले रहा था.

"पापा, पापा पनोव," अचानक कमरे में एक आवाज आई. तुरंत बूढ़ा मोची कूदकर खड़ा हुआ. उनकी सफ़ेद मूंछें कांपने लगीं. "तुम कौन हो?" वो चिल्लाए. उन्हें अस्पष्ट दिखाई दे रहा था. वो अपने चश्मे के बिना बहुत कम देख सकते थे, लेकिन फिर उन्हें ऐसा लगा जैसे वहां कोई नहीं था.

"पापा पनोव," आवाज ने फिर कहा. "आप मुझे देखना चाहते थे और अगर मैं आपकी छोटी दुकान पर आता तो आप मुझे एक उपहार देना चाहते थे. कल भोर से शाम तक आप गली में देखते रहें क्योंकि मैं वहां ज़रूर आऊंगा. आप मुझे पहचानने की कोशिश करें क्योंकि मैं आपको यह नहीं बताऊंगा कि मैं कौन हूं."

फिर सब कुछ शांत हो गया. पापा पानोव ने अपनी आँखें मलीं और वो कुर्सी से उठे. चूल्हे में लकड़ी का कोयला राख हो गया था और लैंप पूरी तरह से बुझ गया था, लेकिन बाहर, हर जगह घंटियाँ बज रही थीं. क्रिसमस आ गया था.

"अच्छा, तो वो खुद आए थे," बूढ़े ने खुद से कहा. "वो खुद यीशु थे." उन्होंने सोच-समझकर अपनी मूंछें मरोड़ीं. "शायद वो एक सपना हो - खैर कोई बात नहीं. मैं देखूंगा और उम्मीद करूंगा कि वो क्रिसमस के दिन मुझसे मिलने आएं. लेकिन मैं उन्हें कैसे पहचानूंगा? वो अब एक छोटा लड़का नहीं होगा, अब वो एक बड़ा आदमी बन हो गया होगा. वो एक राजा होगा क्योंकि वो स्वयं भगवान है."

बूढ़े ने सिर हिलाया, "डियर, डियर," उन्होंने धीरे से कहा. "मुझे उन्हें बहुत ध्यान से देखना होगा."

पापा पानोव उस रात बिस्तर पर लेटने नहीं गए. वो खिड़की के सामने अपनी केन की कुर्सी पर ही बैठे रहे, और रास्ते से गुजरने वाले लोगों को देखते रहे. धीरे-धीरे सूरज की किरणें पहाड़ी पर चढ़ आईं और बाहर की लंबी-चौड़ी गली को रोशन करने लगीं.

अभी तक सड़क पर कोई नहीं आया था.

"मैं क्रिसमस के नाश्ते के लिए अपने लिए कॉफी का एक अच्छा मग बनाऊंगा," पापा पानोव ने खुशी से कहा. "मैं चूल्हे में लकड़ी का कोयला भरूंगा और फिर कॉफी का एक बड़ा मग पीयूंगा, लेकिन मैं हर समय खिड़की पर नजर रखूंगा. मुझे उम्मीद है कि वो आज आएंगे."

फिर पापा पनोव इंतजार करने लगे.



अंत में कोई आया. घुमावदार सड़क के दूर छोर पर उन्हें एक आकृति दिखाई दी. पापा पनोव ने अपना चेहरा कांच की ठंडी खिड़की पर दबाया. वो बहुत उत्साहित थे - शायद यीशु उनसे मिलने आ रहे हों. फिर वो निराश होकर पीछे हट गए. जो आकृति करीब आ रहा थी वो अब धीरे-धीरे सड़क पर चढ़ रही थी, वो बार-बार रुक रही थी. पापा पानोव जानते थे कि वो कौन था - वो झाड़ू लगाने वाला बूढ़ा थे जो हर हफ्ते अपनी एक-पहिया गाड़ी और झाड़ू लेकर आता था.

पापा पानोव को कुछ गुस्सा आया. उनके पास बूढ़े सफाई कर्मचारी पर नजर रखने से बेहतर काम करने के लिए था. वो उस समय परमेश्वर की - राजा यीशु की प्रतीक्षा कर रहे थे.

वो अधीरता से खिड़की से दूर हो गए और उन्होंने बूढ़े सफाई कर्मचारी के गुजरने का इंतज़ार किया. लेकिन जब वो पीछे मुड़े तो उन्होंने देखा कि सफाई कर्मचारी, पापा पनोव की दुकान के सामने सड़क के दूसरी तरफ खड़ा था. उसने अपना ठेला एक ओर खड़ा किया और वो अपने हाथों को आपस में रगड़ रहा था और अपने पैरों को पटक रहा था. पापा पनोव को उसे देखकर दया आई. बेचारे सफाई कर्मचारी को बहुत ठंड लग रही होगी. उस गरीब को क्रिसमस वाले दिन भी काम करना पड़ रहा था!

पापा पनोव ने खिड़की को खटखटाया लेकिन बूढ़े आदमी ने उन्हें नहीं सुना. फिर पापा पानोव ने जाकर अपनी छोटी सी दुकान का दरवाजा खोला.

"अरे!' पापा पानोव ने दरवाजे से पुकारा, "अरे बूढ़े आदमी!" गरीब सफाई कर्मचारी ने उत्सुकता से इधर-उधर देखा - उसके गंदे काम के कारण लोग अक्सर उससे बहुत रुखाई से पेश आते थे - लेकिन पापा पानोव उसे देखकर मुस्कुराए. "अंदर आओ, और एक कप कॉफी पियो," उन्होंने कहा. "तुम ठंड से जमे हुए लग रहे हो." सफाई कर्मचारी ने तुरंत अपनी झाड़ू और ठेला छोड़ दिया.

"अगर मैं अंदर आऊं, तो आप बुरा तो नहीं मानेंगे," उसने छोटी दुकान में अंदर घुसते हुए कहा. "आप सच में बहुत दयालु हैं, बहुत दरियादिल हैं."

पापा पनोव ने चूल्हे पर रखे गर्म बर्तन से एक मग कॉफी उँडेली. "मैं कम-से-कम इतना तो कर ही सकता हूं," पापा पानोव ने कहा. "आखिरकार आज क्रिसमस का दिन है."

बूढ़े सफाई कर्मचारी ने एक गहरी सांस ली. "ठीक है, क्रिसमस में मुझे बस यही मिलेगा." जब उसने चूल्हे पर खुद को गर्म किया, तब उसके नम कपड़ों से बदबू पैदा हुई.





पापा पानोव खिड़की पर अपने स्थान पर लौट आए और उन्होंने सड़क पर ऊपर-नीचे देखा.

"क्या आप किसी मेहमान का इंतज़ार कर रहे हैं?" बूढ़े सफाई कर्मचारी ने पूछा, "कहीं मैं आपके रास्ते में तो नहीं आ रहा हूँ?"

पापा पनोव ने अपना सिर हिलाया, "क्या तुमने यीशु के बारे में सुना है?" उन्होंने पूछा.

"भगवान का बेटा?" बूढ़े सफाई कर्मचारी ने पूछा.

"हाँ, वो आज आ रहा है," पापा पनोव ने उत्तर दिया.

बूढ़े ने हैरानी से उनकी ओर देखा.

फिर पापा पनोव ने उसे पूरी कहानी सुनाई.

"इसलिए मैं उनको बाहर सड़क पर देख रहा हूँ," उन्होंने अंत में कहा.

सफाई कर्मचारी ने अपना कॉफ़ी का मग उठाया. उसने उदास होकर अपना सिर हिलाया और दरवाजे की ओर चल पड़ा.

"ठीक है, शुभकामनाएँ," सफाई कर्मचारी ने कहा, "और कॉफी के लिए धन्यवाद."

पहली बार सफाई कर्मचारी मुस्कुराया. फिर वो अपने ठेला गाड़ी को इकट्ठा करके गली में चला गया.

पापा पनोव ने खुले दरवाजे पर खड़े होकर सफाई कर्मचारी को गायब होते हुए देखा.

उन्होंने गली में ऊपर-नीचे देखा. सर्दियों का सूरज चमक रहा था और उसकी किरणों की थोड़ी गर्मी खिड़की और सड़क पर बर्फ को पिघला रही थी.

पार्टियों में शराब पीने के बाद कुछ लोग अपने-अपने घर वापिस जा रहे थे. अच्छे कपड़े पहने लोग अपने रिश्तेदारों से मिलने जा रहे थे. वे लोग पापा पानोव को देखकर सिर हिला रहे थे और मुस्कुरा रहे थे.

"क्रिसमस की बधाई. पापा पनोव," उन्होंने कहा. बूढ़े मोची ने जवाब में सिर हिलाया और वो मुस्कुराए लेकिन उन्होंने किसी को रोका नहीं ... पापा पनोव उन सभी को नाम से जानते थे. पर आज वो किसी और का इंतजार कर रहे थे.



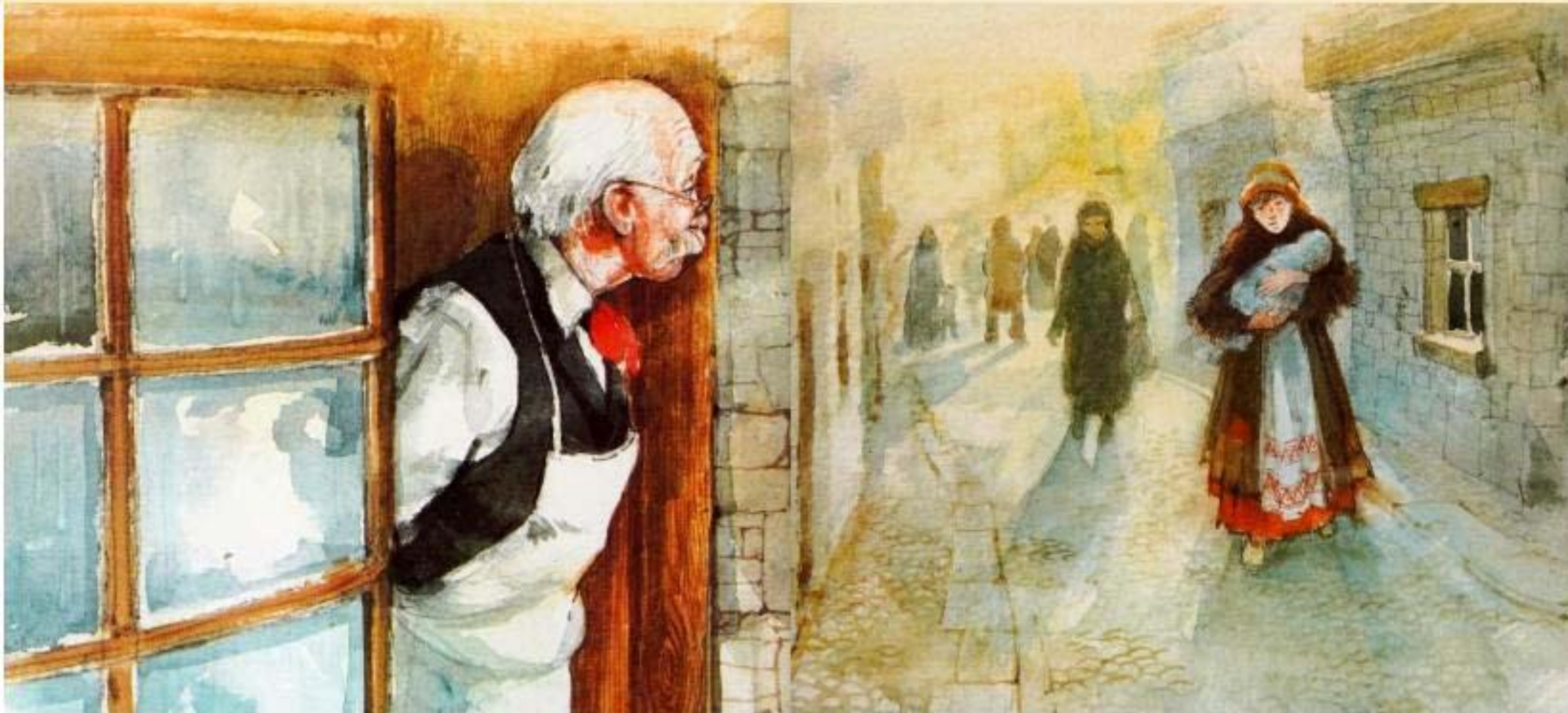
पापा पनोव अपना दरवाज़ा बंद करने ही वाले थे जब उनकी नज़र किसी चीज़ पर पड़ी. दीवार की छाया में एक युवती एक बच्चे को लेकर जा रही थी. वो बहुत कमज़ोर थी, उसका चेहरा थका हुआ था और उसके कपड़े जर्जर थे.

पापा पानोव ने उसे देखा. अचानक उन्होंने उस बुलाया. "नमस्कार, तुम अंदर क्यों नहीं आती हो. ज़रा अपने आपको आंच पर गर्म कर लो?" युवती ने चौंककर देखा मानो वो वहां से भागने की तैयारी कर रही हो. लेकिन उसे बूढ़े मोची की चमकीली आँखों में प्रेम दिखाई दिया.

"आप बहुत दयालु हैं," युवती ने कहा. फिर पापा पनोव शरमाते हुए एक ओर हो हटे जिससे युवती उनकी छोटी सी दुकान में प्रवेश कर सके.

"अंदर आओ," उन्होंने कहा, "क्योंकि तुम ठंड से जमी लगती हो. और तुम्हें बहुत दूर जाना है?"

"मुझे अगले गाँव में जाना है," उसने उत्तर दिया. "वो लगभग चार मील दूर है. पहले मैं मिल में रहती थी, लेकिन मेरे पास किराया देने के लिए पैसे नहीं बचे थे. इसलिए मुझे वो जगह छोड़नी पड़ी और अब मैं अपने चचेरे भाई के घर जाकर रहूंगी. मेरा पति नहीं है."



महिला अंदर आई और चूल्हे के पास खड़ी हो गई. पापा पानोव ने उसके नन्हे बच्चे को अपनी गोद में ले लिया. "क्या तुम मेरे साथ कुछ डबलरोटी और सूप खाओगी?" उन्होंने पूछा. लेकिन महिला ने गर्व से मना किया.

"फिर बच्चे के लिए कुछ दूध?" उन्होंने पूछा. "मैं चूल्हे पर कुछ दूध गरम करूँगा. तुम चिंता मत करो." उनकी आँखें चमक उठीं - " देखो,मेरे अपने भी बच्चे हैं." फिर छोटे बच्चा हंसा और उसने अपने पैरों को पटका.

"डिअर, डिअर," पापा पानोव ने सिर हिलाते हुए कहा,
"इस गरीब बच्चे के पास जूते नहीं हैं."

"मेरे पास उसे देने के लिए कुछ भी नहीं है," युवती ने कहा.

जब पापा पानोव छोटे लड़के को खाना खिला रहे थे, तब उनके दिमाग में एक विचार आया. उन्होंने उस विचार को दूर धकेला - लेकिन वो फिर वापस आया. उनके ऊँचे शेल्फ पर बॉक्स में छोटे जूतों की एक जोड़ी रखी थी जो उन्होंने बहुत पहले बनाए थे - शायद वे बच्चे को फिट आ सकते थे.

फिर पापा पनोव ने उन्हें शेल्फ से नीचे उतारा और उन्हें बच्चे के पैरों पर डालकर देखा. वे बिल्कुल फिट आए. बढ़िया!

"तुम उन जूतों को ले सकते हो," उन्होंने धीरे से कहा. युवती बहुत खुश हुई. "मैं इस भेंट के लिए आपको कैसे धन्यवाद दे सकती हूं?" उसने कहा.

लेकिन पापा पानोव ने युवती की बात नहीं सुनी. वो उत्सुकता से खिड़की से बाहर देख रहे थे. क्या जब वो उस बच्चे को खिला रहे थे तब कहीं यीशु चले तो नहीं गए?

"क्या कुछ बात है?" युवती ने विनम्रता से पूछा.

"क्या तुमने यीशु के बारे में सुना है जो क्रिसमस के ही दिन पैदा हुए थे?" बूढ़े मोची ने उत्तर दिया.

लड़की ने सिर हिलाया.

"वो आज आ रहे हैं," पापा पानोव ने कहा, "उन्होंने मुझ से वादा किया है." और फिर पापा पानोव ने उसे अपने सपने के बारे में सब कुछ बताया.

युवती ने पापा पानोव के समाप्त होने तक उनकी बात सुनी. उसने अविश्वास से पापा पानोव को देखा, लेकिन उसने बूढ़े मोची के हाथ को भी थपथपाया.

"ठीक है, मुझे आशा है कि आपका सपना ज़रूर सच होगा," उसने कहा. "आप इसके लायक हैं क्योंकि आपने मेरे साथ और मेरे बच्चे के लिए इतना अच्छा व्यवहार किया है."

और उसके बाद वो युवती अपने रास्ते चली गई.

पापा पानोव ने अपना दरवाजा बंद कर लिया और रात के खाने सूप के लिए गोभी को उबाला. पापा पानोव एक बार फिर से खिड़की पर आकर खड़े हो गए.



घंटे बीत गए और लोग आए और चले गए. पापा पनोव ने जाने वाले सभी लोगों को करीबी से देखा. लेकिन उन्हें यीशु कहीं नहीं दिखे.

फिर वो अंदर से डरने लगे. शायद यीशु आए हों और उन्होंने उन्हें पहचाना ही नहीं हो. शायद यीशु जल्दी से गुजर गए हों जब पापा पानोव आग जलाने या सूप उबालने में व्यस्त हों! बूढ़ा मोची अब और नहीं बैठ नहीं सका. वो अंतिम दर्शन के लिए अपनी छोटी दुकान के दरवाजे पर गया.

सभी प्रकार के लोग आ-जा रहे थे - बच्चे और बूढ़े, भिखारी और दादी-दादा, हंसमुख लोग और क्रोधी लोग. किसी को पापा पनोव ने मुस्कान दी, किसी की ओर उन्होंने सिर हिलाया और भिखारियों को सिक्का दिया या डबलरोटी का एक टुकड़ा दिया.

लेकिन यीशु नहीं आए.

फिर शाम ढल गई और दिसंबर के कोहरे ने फिर से फैलना शुरू किया. फिर बूढ़े मोची ने उदास होकर अपना तेल का लैंप जलाया और बड़ी केन की कुर्सी पर बैठ गया. उसने पढ़ने के लिए अपनी किताब निकाली, लेकिन उसका दिल बहुत भारी था और उसकी आँखें इतनी थकी हुई थीं कि पन्ने पर लिखे शब्द उन्हें समझ नहीं आ रहे थे.

"अच्छा तो वो सिर्फ एक सपना था," उन्होंने उदास होकर खुद से कहा. मैं उनकी पर बहुत विश्वास करना चाहता था. मैं चाहता था कि वो आएं.

और फिर उनके चश्मे के पीछे से दो बड़े आंसू बह निकले, और उसकी आंखों में भी आंसू भर गए, और वो मुश्किल से ही देख पाए.



फिर पापा पानोव को लगा जैसे कमरे में कोई हो. अपने आँसुओं से भरी आँखों से पापा पानोव को लगा जैसे कि छोटी दुकान के पास से लोगों की लंबी लाइन गुजर रही हो.

वहाँ सड़क का सफाई कर्मचारी था, और वो युवती अपने छोटे बच्चे के साथ थी, और वे लोग भी थे जिन्हें उन्होंने उस दिन देखा था और जिनसे उन्होंने बातचीत की थी.

और गुजरते हुए लोग एक-एक करके फुसफुसाए, “क्या आपने मुझे नहीं देखा? क्या आपने मुझे नहीं देखा, पापा पानोव?"

"तुम कौन हो?" बूढ़ा मोची अपनी कुर्सी से उठता हुआ चिल्लाया. "तुम कौन हो? मुझे बताओ."



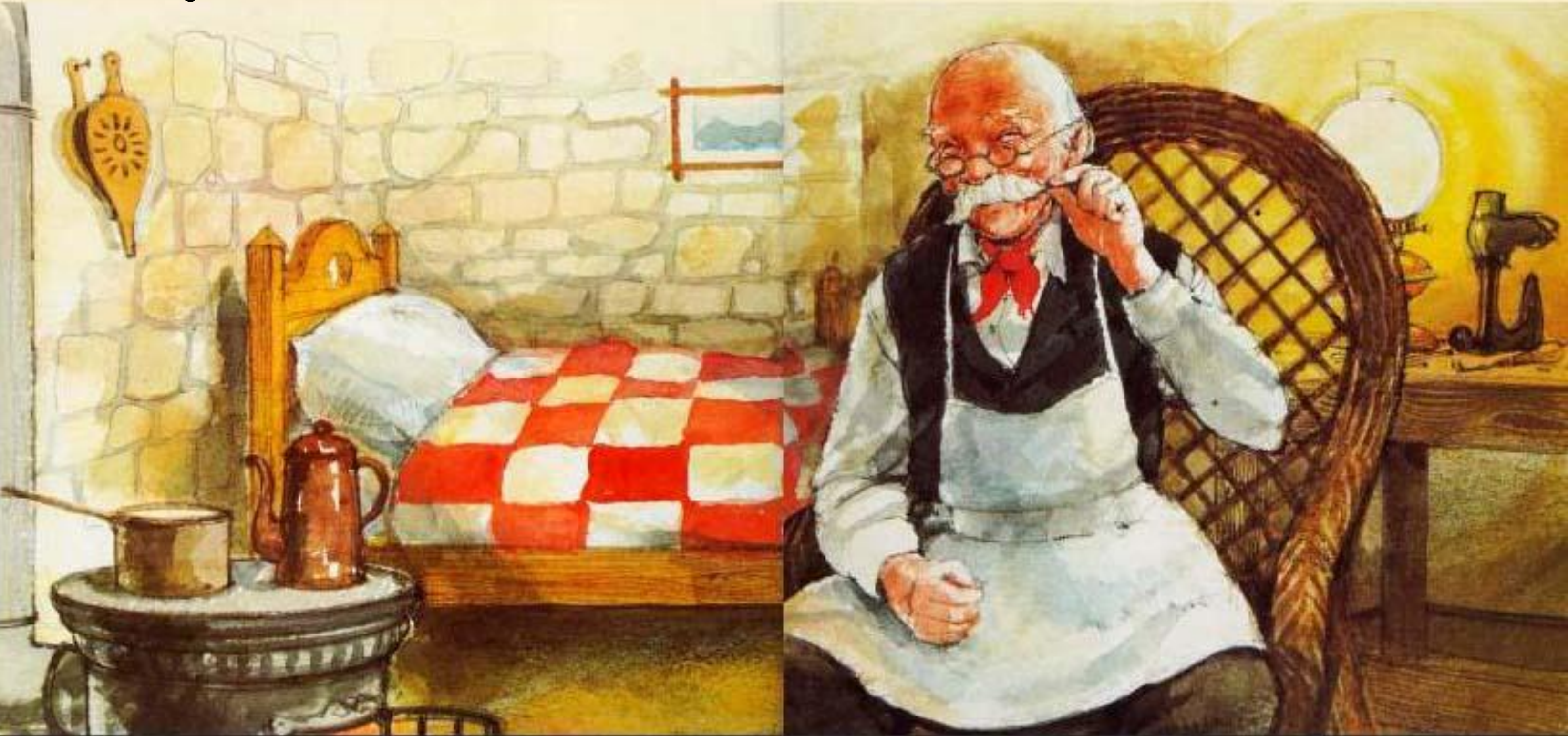
और फिर पापा पानोव को वही आवाज़ सुनाई दी जो एक रात पहले उन्होंने सुनी थी. वो आवाज़ कहाँ से आई यह वो नहीं बता सकते थे.

"मैं भूखा था और तुमने मुझे खाना दिया. मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी दिया. मुझे ठंड लग रही थी और तुम मुझे अपने घर के अंदर ले गए. तुमने आज जिन लोगों की मदद की, उनकी मदद करके तुम लगातार मेरी ही मदद कर रहे थे!"

फिर सब कुछ शांत हो गया.

फिर बूढ़े की आँखों के आँसू सूख गए और अब उन्हें और कोई दिखाई नहीं दे रहा था. "डिअर, डिअर," पापा पानोव ने धीरे से अपनी लंबी सफ़ेद मूंछों को खींचते हुए कहा, "तो आखिर वो आया था."

फिर बूढ़े मोची बनाने वाले ने सोच-समझकर अपना सिर आगे-पीछे हिलाया. फिर वो मुस्कुराए और उनके छोटे गोल चश्मे के पीछे आँखों में चमक वापस आ गई.





आज क्रिसमस का दिन है,

और बूढ़ा मोची पापा पानोव एक

विशेष मेहमान की उम्मीद कर रहा है.

लेकिन चीजें बिल्कुल वैसी नहीं घटती हैं

जैसा उसने सोचा था...

लेकिन दिन के अंत तक

उनके गोल चश्मे के पीछे आँखों में

चमक वापस आ जाती है!